ResearchNext International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 3, July-September 2026 ISSN (O)- 3107-9725

Email id: editor@researchnextjournal.com Website- www.researchnextjournal.com

इंडो–पैसिफिक रणनीति और भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षाः राजनीतिक दृष्टिकोण

मुकुल कुमार

पूर्व असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा विभाग, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

Article Info: *(Recieved- 08/03/2026, Accept- 18/06/2026, Published- 05/07/2026)*

DOI- 10.64127/rnimj.2026v2i3003

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र वैश्विक शक्ति–संतुलन, समुद्री व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा का सबसे महत्त्वपूर्ण भू–राजनीतिक क्षेत्र बनकर उभरा है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला यह क्षेत्र विश्व अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा माना जाता है, क्योंकि वैश्विक समुद्री व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा भाग इसी क्षेत्र से होकर संचालित होता है। भारत की भौगोलिक स्थिति, विस्तृत समुद्री तटरेखा, द्वीपीय क्षेत्र तथा हिंद महासागर में उसकी केंद्रीय उपस्थिति उसे इंडो–पैसिफिक व्यवस्था का एक स्वाभाविक एवं महत्त्वपूर्ण भागीदार बनाती है। इसी कारण भारत ने अपनी विदेश नीति, रक्षा नीति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में इंडो–पैसिफिक को विशेष स्थान प्रदान किया है। भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति किसी सैन्य गठबंधन की नीति नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र, समावेशी, नियम–आधारित तथा बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था की समर्थक है। इस रणनीति का उद्देश्य समुद्री सुरक्षा, मुक्त नौवहन, अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान, क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक संपर्क तथा साझा समृद्धि को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत Act East Policy, SAGAR (Security and Growth for All in the Region) तथा Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI) जैसी पहलें भारत की समुद्री एवं सामरिक दृष्टि को सुदृढ़ करती हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य इंडो–पैसिफिक रणनीति के राजनीतिक आयामों तथा भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा पर उसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बदलते वैश्विक शक्ति–संतुलन, चीन की बढ़ती समुद्री सक्रियता, क्वाड (Quad) की भूमिका, समुद्री सुरक्षा, रक्षा कूटनीति तथा सामरिक स्वायत्तता के संदर्भ में भारत की नीति किस प्रकार विकसित हुई है। साथ ही यह शोध–पत्र समकालीन भारतीय राजनीति में इंडो–पैसिफिक रणनीति की उपयोगिता, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कुंजी शब्द– इंडो–पैसिफिक, राष्ट्रीय सुरक्षा, भारतीय राजनीति, समुद्री सुरक्षा, क्वाड, सागर (SAGAR), इंडो–पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव, रक्षा कूटनीति, सामरिक स्वायत्तता, विदेश नीति।

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भू–राजनीतिक शक्ति–संतुलन तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद जहाँ एशिया विश्व अर्थव्यवस्था का केंद्र बनकर उभरा, वहीं इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को एकीकृत रणनीतिक क्षेत्र के रूप में देखने की अवधारणा ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को नई दिशा प्रदान की। यही अवधारणा आगे चलकर इंडो–पैसिफिक के रूप में विकसित हुई। आज यह क्षेत्र केवल समुद्री भूगोल का प्रश्न नहीं है, बल्कि वैश्विक व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री संसाधनों, सामरिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी सहयोग तथा अंतरराष्ट्रीय कानून से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

भारत के लिए इंडो–पैसिफिक का महत्त्व उसकी भौगोलिक स्थिति से ही स्पष्ट हो जाता है। भारत की लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा, अंडमान–निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह, तथा हिंद महासागर के मध्य स्थित उसकी सामरिक स्थिति उसे इस क्षेत्र का प्रमुख समुद्री राष्ट्र बनाती है। भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार तथा ऊर्जा आयात समुद्री मार्गों पर निर्भर है। इसलिए समुद्री मार्गों की सुरक्षा, समुद्री संचार–रेखाओं की निरंतरता तथा हिंद महासागर की स्थिरता भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से सीधे जुड़ी हुई है।

भारत ने पिछले एक दशक में अपनी विदेश नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। श्स्ववा मेंज च्वसपबलश को आगे बढ़ाकर 'Act East Policy' में परिवर्तित किया गया तथा समुद्री सहयोग को नई प्राथमिकता प्रदान की गई। वर्ष 2015 में SAGAR (Security and Growth for All in the Region) की अवधारणा प्रस्तुत की गई, जबकि वर्ष 2019 में Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI) की घोषणा की गई। इन पहलों का उद्देश्य केवल समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करना नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सहयोग, समुद्री अर्थव्यवस्था, आपदा प्रबंधन, क्षमता निर्माण तथा सतत विकास को भी प्रोत्साहित करना है। समकालीन भारतीय राजनीति में इंडो–पैसिफिक रणनीति का महत्त्व केवल विदेश नीति तक सीमित नहीं है। यह राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा आधुनिकीकरण, समुद्री अवसंरचना, रक्षा कूटनीति, साइबर सुरक्षा, आपूर्ति शृंखला सुरक्षा तथा आर्थिक हितों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भारत ने एक ओर अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया तथा फ्रांस जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ किया है, वहीं दूसरी ओर आसियान की केंद्रीय भूमिका, रणनीतिक स्वायत्तता तथा समावेशी क्षेत्रीय व्यवस्था पर भी बल दिया है। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत की समकालीन विदेश नीति की प्रमुख विशेषता है।

इंडो–पैसिफिक की अवधारणाः अर्थ, विकास एवं सामरिक महत्त्व

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में ष्इंडो–पैसिफिकष शब्द का प्रयोग केवल भौगोलिक अवधारणा के रूप में किया जाता था, किन्तु समय के साथ यह वैश्विक सामरिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विमर्श का प्रमुख आधार बन गया। वर्तमान में इंडो–पैसिफिक का आशय हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले उस व्यापक समुद्री एवं भू–राजनीतिक क्षेत्र से है, जो पूर्वी अफ्रीका के तट से लेकर पश्चिमी अमेरिका तक विस्तृत है। इस क्षेत्र में विश्व की लगभग आधी जनसंख्या निवास करती है तथा वैश्विक आर्थिक गतिविधियों का एक बड़ा भाग संचालित होता है। इसके अतिरिक्त विश्व के लगभग 60 प्रतिशत समुद्री व्यापार तथा ऊर्जा परिवहन का अधिकांश भाग इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है। यही कारण है कि वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय राजनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गया है।

इंडो–पैसिफिक की अवधारणा को व्यवस्थित रूप से वैश्विक विमर्श में स्थापित करने का श्रेय मुख्यतः जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे को दिया जाता है। वर्ष 2007 में भारतीय संसद को संबोधित करते हुए उन्होंने "Confluence of the Two Seas" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को एक साझा रणनीतिक क्षेत्र के रूप में देखा गया। बाद के वर्षों में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत तथा जापान ने इस अवधारणा को अपनी विदेश एवं सुरक्षा नीतियों का प्रमुख आधार बनाया। यद्यपि विभिन्न देशों द्वारा इंडो–पैसिफिक की व्याख्या अलग–अलग रूपों में की गई है, तथापि सभी के लिए इसका मूल उद्देश्य समुद्री सुरक्षा, मुक्त नौवहन, नियम–आधारित व्यवस्था तथा क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करना है। भारत ने इंडो–पैसिफिक की अवधारणा को किसी सैन्य गठबंधन अथवा शक्ति–संघर्ष के रूप में स्वीकार नहीं किया है। भारत की दृष्टि में इंडो–पैसिफिक एक मुक्त, समावेशी, नियम–आधारित तथा बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था है, जिसमें सभी देशों की संप्रभुता, अंतरराष्ट्रीय कानून तथा समुद्री अधिकारों का सम्मान किया जाए। भारत ने विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय (UNCLOS–1982) के अनुरूप समुद्री गतिविधियों तथा मुक्त नौवहन का समर्थन किया है। भारत की यह नीति स्पष्ट करती है कि उसकी इंडो–पैसिफिक रणनीति किसी देश के विरुद्ध नहीं, बल्कि सहयोग एवं साझा विकास के पक्ष में है।

भारत की इस नीति के पीछे उसके व्यापक राष्ट्रीय हित निहित हैं। भारत का लगभग 95 प्रतिशत विदेशी व्यापार (आयतन के आधार पर) तथा लगभग 70 प्रतिशत व्यापारिक मूल्य समुद्री मार्गों से संचालित होता है। इसी प्रकार भारत के ऊर्जा आयात का अधिकांश भाग पश्चिम एशिया से हिंद महासागर के माध्यम से देश तक पहुँचता है। यदि इन समुद्री मार्गों में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है, तो उसका सीधा प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ सकता है। इसलिए हिंद महासागर और उससे जुड़े समुद्री

मार्गों की सुरक्षा भारत के लिए केवल विदेश नीति का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की अनिवार्य आवश्यकता है।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र का सामरिक महत्त्व केवल व्यापारिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण भी अत्यधिक बढ़ गया है। चीन द्वारा दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीपों का निर्माण, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI), समुद्री सिल्क रूट, हिंद महासागर में बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति तथा जिबूती, ग्वादर और हम्बनटोटा जैसे बंदरगाहों में उसकी सक्रियता ने क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन को प्रभावित किया है। इसके परिणामस्वरूप भारत, जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य लोकतांत्रिक देशों ने समुद्री सहयोग और सामरिक समन्वय को अधिक महत्त्व देना प्रारम्भ किया है।

भारत की दृष्टि में इंडो–पैसिफिक का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष ASEAN की केंद्रीय भूमिका है। भारत यह मानता है कि क्षेत्रीय स्थिरता तभी संभव है जब दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के संगठन (ASEAN) को क्षेत्रीय सहयोग का केंद्र बनाया जाए। इसीलिए भारत की ।बज म्ेंज च्वसपबल और इंडो–पैसिफिक रणनीति परस्पर पूरक हैं। भारत आर्थिक सहयोग, समुद्री संपर्क, रक्षा साझेदारी, क्षमता निर्माण तथा आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में ैम।छ देशों के साथ निरंतर सहयोग बढ़ा रहा है। यह सहयोग केवल सामरिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आर्थिक तथा कूटनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

समकालीन भारतीय राजनीति में इंडो–पैसिफिक रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण आयाम रणनीतिक स्वायत्तता है। भारत अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया तथा फ्रांस जैसे देशों के साथ सहयोग को सुदृढ़ कर रहा है, किन्तु साथ ही वह रूस, आसियान, अफ्रीका तथा पश्चिम एशिया के देशों के साथ भी अपने संबंधों को संतुलित बनाए हुए है। भारत किसी सैन्य गुट की राजनीति का हिस्सा बनने के स्थान पर बहुपक्षीय सहयोग, संवाद तथा साझा सुरक्षा व्यवस्था पर बल देता है। यही नीति भारत को वैश्विक राजनीति में एक स्वतंत्र एवं उत्तरदायी शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

अतः स्पष्ट है कि इंडो–पैसिफिक की अवधारणा केवल समुद्री भूगोल तक सीमित नहीं है। यह आर्थिक सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री कानून, रक्षा कूटनीति, बहुपक्षीय सहयोग तथा राष्ट्रीय सुरक्षा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। भारत ने इसे अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप एक समावेशी, सहयोगात्मक तथा नियम–आधारित रणनीति के रूप में विकसित किया है, जिसने समकालीन भारतीय विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के स्वरूप को नई दिशा प्रदान की है।

भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति– Act East Policy, SAGAR एवं Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI)

भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति किसी आकस्मिक नीति–परिवर्तन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र भारत की विदेश नीति, समुद्री दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय सुरक्षा चिंतन के क्रमिक विकास का परिणाम है। शीतयुद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण के विस्तार तथा एशिया में बदलते शक्ति–संतुलन ने भारत को अपनी विदेश नीति में समुद्री आयाम को अधिक महत्त्व देने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1991 में आर्थिक उदारीकरण के पश्चात भारत ने दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से स्ववा म्ेंज च्वसपबल अपनाई, जिसे वर्ष 2014 में अधिक सक्रिय और रणनीतिक स्वरूप प्रदान करते हुए ।बज म्ेंज च्वसपबल में परिवर्तित किया गया। इस नीति का उद्देश्य केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं था, बल्कि सामरिक साझेदारी, समुद्री सुरक्षा, संपर्क, रक्षा सहयोग तथा क्षेत्रीय स्थिरता को भी इसमें सम्मिलित किया गया।

।बज म्ेंज च्वसपबल भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति की आधारशिला मानी जाती है। इस नीति के माध्यम से भारत ने आसियान (ASEAN) देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सुरक्षा सहयोग को अभूतपूर्व गति प्रदान की। भारत ने वियतनाम, इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस तथा अन्य दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ रक्षा समझौतों, नौसैनिक अभ्यासों तथा समुद्री क्षमता निर्माण के कार्यक्रमों का विस्तार किया। यह सहयोग भारत की समुद्री सुरक्षा के साथ–साथ हिंद–प्रशांत क्षेत्र में संतुलित शक्ति–संरचना स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ।

भारत की समुद्री रणनीति का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तंभ SAGAR (Security and Growth for All in the Region) है। इस अवधारणा की घोषणा प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2015 में मॉरीशस यात्रा के दौरान की गई थी। SAGAR का मूल उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा, सहयोग, आर्थिक विकास तथा साझा समृद्धि को प्रोत्साहित करना है।

यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा किसी एक राष्ट्र के प्रभुत्व से नहीं, बल्कि पारस्परिक विश्वास, क्षमता निर्माण, समुद्री सहयोग तथा नियम–आधारित व्यवस्था से सुनिश्चित की जा सकती है।ै ।ळ।त की अवधारणा भारत की समुद्री कूटनीति को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करती है। इसके अंतर्गत भारत ने मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स, श्रीलंका, मेडागास्कर तथा अन्य हिंद महासागर देशों को तटरक्षक पोत, समुद्री निगरानी प्रणाली, हाइड्रोग्राफिक सहायता, प्रशिक्षण तथा मानवीय सहायता उपलब्ध कराई है। इसके अतिरिक्त समुद्री डकैती–रोधी अभियानों, आपदा राहत (HADR), खोज एवं बचाव अभियानों तथा समुद्री क्षेत्र जागरूकता (Maritime Domain Awareness) में भी भारत ने सक्रिय भूमिका निभाई है। इससे भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में एक Net Security Provider के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है।

भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने की दिशा में सबसे महत्त्वपूर्ण पहल प्दकव–च्ंबपपिब व्बमंद प्दपजपंजपअम (IPOI) है। इसकी घोषणा प्रधानमंत्री द्वारा 4 नवम्बर 2019 को बैंकॉक में आयोजित 14वें म्ंज ।ेपं ैनउउपज में की गई थी। IPOI का उद्देश्य इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग को सात प्रमुख स्तंभों– समुद्री सुरक्षा, समुद्री पारिस्थितिकी, समुद्री संसाधन, क्षमता निर्माण एवं संसाधन साझाकरण, आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग तथा व्यापार, संपर्क एवं समुद्री परिवहन के माध्यम से सुदृढ़ करना है। भारत ने स्पष्ट किया कि प्च्व् कोई नया सुरक्षा गठबंधन नहीं है, बल्कि सहयोग–आधारित, लचीला और समावेशी ढाँचा है, जिसमें सभी इच्छुक देशों की भागीदारी का स्वागत है। IPOI की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह ASEAN Outlook on the Indo-Pacific (AOIP) के साथ सामंजस्य स्थापित करती है। भारत ने बार–बार यह स्पष्ट किया है कि इंडो–पैसिफिक की किसी भी व्यवस्था में ASEAN की केंद्रीय भूमिका को बनाए रखना आवश्यक है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत की रणनीति किसी शक्ति–प्रतिस्पर्धा पर आधारित न होकर सहयोगात्मक सुरक्षा और बहुपक्षवाद की समर्थक है।

समकालीन भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में Act East Policy, SAGAR तथा IPOI एक–दूसरे के पूरक हैं। ।बज म्ंज च्वसपबल भारत की पूर्वोन्मुखी कूटनीतिक एवं आर्थिक नीति है; SAGAR हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री सुरक्षा एवं सहयोग की आधारभूत अवधारणा है; जबकि IPOI इन दोनों को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के व्यापक बहुपक्षीय सहयोग से जोड़ती है। इन तीनों पहलों ने भारत की विदेश नीति को समुद्री आयाम प्रदान करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों तथा क्षेत्रीय नेतृत्व को सुदृढ़ किया है। यही कारण है कि वर्तमान समय में इंडो–पैसिफिक रणनीति भारतीय विदेश नीति का केंद्रीय तत्व बन चुकी है और राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ उसका प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो गया है।

क्वाड (QUAD), चीन की समुद्री रणनीति एवं भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा

इक्कीसवीं शताब्दी में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति–संतुलन का सबसे बड़ा निर्धारक कारक चीन का तीव्र आर्थिक, सामरिक तथा नौसैनिक विस्तार रहा है। पिछले दो दशकों में चीन ने अपनी समुद्री शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि करते हुए हिंद महासागर तथा पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में स्थायी रणनीतिक उपस्थिति स्थापित करने का प्रयास किया है। इसके परिणामस्वरूप इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सामरिक प्रतिस्पर्धा तीव्र हुई है और भारत सहित अनेक लोकतांत्रिक देशों ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों का पुनर्मूल्यांकन किया है। भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति इसी बदलते सामरिक परिवेश की प्रतिक्रिया है, जिसका उद्देश्य केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना ही नहीं, बल्कि नियम–आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था तथा समुद्री स्थिरता को भी बनाए रखना है।

चीन की समुद्री रणनीति और स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स

चीन की समुद्री नीति का प्रमुख उद्देश्य हिंद महासागर में अपनी सामरिक पहुँच का विस्तार करना तथा ऊर्जा एवं व्यापारिक आपूर्ति मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसी संदर्भ में स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की अवधारणा विशेष रूप से चर्चा में रही है। इस रणनीति के अंतर्गत चीन ने पाकिस्तान के ग्वादर, श्रीलंका के हम्बनटोटा, म्यांमार के क्याउकफ्यू, बांग्लादेश के चट्टोग्राम तथा अफ्रीका के जिबूती जैसे बंदरगाहों में निवेश एवं अवसंरचना विकास किया है। यद्यपि चीन इन परियोजनाओं को आर्थिक सहयोग का अंग बताता है, किन्तु अनेक सामरिक विश्लेषकों के अनुसार इनका दीर्घकालिक महत्त्व नौसैनिक रसद, समुद्री निगरानी तथा सामरिक उपस्थिति से भी जुड़ा हुआ है।

भारत के दृष्टिकोण से यह स्थिति विशेष चिंता का विषय है क्योंकि हिंद महासागर भारत की समुद्री सुरक्षा,

ऊर्जा आपूर्ति तथा व्यापारिक हितों का आधार है। चीन की बढ़ती नौसैनिक गतिविधियों, अनुसंधान पोतों की उपस्थिति तथा पनडुब्बियों की आवाजाही ने भारत को अपनी समुद्री सुरक्षा प्रणाली को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए प्रेरित किया है। इसी कारण भारतीय नौसेना ने समुद्री क्षेत्र जागरूकता, तटीय निगरानी नेटवर्क, अंडमान एवं निकोबार कमान की भूमिका तथा मित्र देशों के साथ समुद्री सहयोग को नई प्राथमिकता प्रदान की है।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और भारत की सुरक्षा

वर्ष 2013 में प्रारम्भ की गई चीन की Belt and Road Initiative (BRI) ने इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की सामरिक राजनीति को नई दिशा दी। इस पहल का समुद्री भाग Maritime Silk Road कहलाता है, जिसका उद्देश्य एशिया, अफ्रीका और यूरोप को समुद्री संपर्कों के माध्यम से जोड़ना है। भारत ने इस परियोजना का समर्थन नहीं किया क्योंकि इसका एक महत्त्वपूर्ण भाग पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरने वाले चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) से संबंधित है, जिसे भारत अपनी संप्रभुता के प्रतिकूल मानता है। इसके अतिरिक्त भारत की यह भी चिंता रही है कि बंदरगाह आधारित निवेश भविष्य में सामरिक उपयोग का माध्यम बन सकते हैं।

क्वाड (QUAD) का उद्भव एवं स्वरूप

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बदलते सामरिक परिवेश के बीच Quadrilateral Security Dialogue (QUAD) का महत्त्व निरंतर बढ़ा है। भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया से मिलकर बना यह समूह किसी औपचारिक सैन्य गठबंधन के रूप में स्थापित नहीं किया गया है, बल्कि इसका उद्देश्य मुक्त, समावेशी, सुरक्षित तथा नियम–आधारित इंडो–पैसिफिक व्यवस्था को सुदृढ़ करना है। क्वाड का पुनरुत्थान वर्ष 2017 के बाद विशेष रूप से हुआ और इसके बाद नियमित शिखर सम्मेलन, विदेश मंत्रियों की बैठकें तथा विभिन्न कार्य समूहों का गठन किया गया। इनके माध्यम से समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, उभरती प्रौद्योगिकियों, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा आपूर्ति शृंखला की मजबूती जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया गया। भारत की दृष्टि में क्वाड का उद्देश्य किसी देश को घेरना नहीं है। भारत ने बार–बार स्पष्ट किया है कि क्वाड का आधार लोकतांत्रिक मूल्यों, अंतरराष्ट्रीय कानून, समुद्री सुरक्षा तथा सहयोगात्मक विकास पर आधारित है। यही कारण है कि भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए क्वाड में सक्रिय भागीदारी करता है। यह नीति भारत की पारंपरिक विदेश नीति तथा समकालीन बहु–संरेखीय कूटनीति के अनुरूप है।

मालाबार नौसैनिक अभ्यास और सामरिक सहयोग

भारत की समुद्री सुरक्षा नीति में मालाबार नौसैनिक अभ्यास (Malabar Naval Exercise) का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह अभ्यास वर्ष 1992 में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका की नौसेनाओं के बीच द्विपक्षीय अभ्यास के रूप में प्रारम्भ हुआ था। समय के साथ इसकी रणनीतिक उपयोगिता और व्यापकता में निरंतर वृद्धि हुई। वर्ष 2015 में जापान को स्थायी सदस्य के रूप में शामिल किया गया तथा वर्ष 2020 से ऑस्ट्रेलिया की पुनः सहभागिता के साथ यह अभ्यास क्वाड देशों का प्रमुख बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास बन गया। वर्तमान में मालाबार अभ्यास केवल सैन्य प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समुद्री सुरक्षा, सामरिक विश्वास, अंतरसंचालनीयता तथा साझी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी मंच बन चुका है। मालाबार अभ्यास के अंतर्गत पनडुब्बी रोधी युद्ध, वायु एवं मिसाइल प्रतिरक्षा, समुद्री निगरानी, विमानवाहक पोत संचालन, समुद्री अवरोधन अभियान, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, सूचना साझाकरण, खोज एवं बचाव अभियान तथा संयुक्त सामरिक अभियानों का व्यापक अभ्यास किया जाता है। इन अभ्यासों के माध्यम से सहभागी देशों की नौसेनाओं के बीच परिचालन समन्वय, तकनीकी दक्षता तथा वास्तविक परिस्थितियों में संयुक्त अभियान संचालित करने की क्षमता का विकास होता है। साथ ही, आधुनिक समुद्री सुरक्षा चुनौतियों जैसे– समुद्री डकैती, आतंकवाद, अवैध तस्करी, साइबर खतरे तथा मानवीय सहायता एवं आपदा राहत अभियानों से निपटने की सामूहिक तैयारी भी सुदृढ़ होती है।

मालाबार नौसैनिक अभ्यास का रणनीतिक महत्त्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि यह हिंद महासागर तथा पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में मुक्त, समावेशी और नियम–आधारित समुद्री व्यवस्था के प्रति सहभागी देशों की साझा प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करता है। यद्यपि क्वाड देशों ने इसे किसी सैन्य गठबंधन का स्वरूप नहीं दिया है, फिर भी यह अभ्यास क्षेत्रीय समुद्री स्थिरता, नौवहन की स्वतंत्रता, अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों के सम्मान तथा समुद्री संचार मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के मध्य सामरिक विश्वास, रक्षा सहयोग तथा समुद्री समन्वय क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई

है, जिसने इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति–संतुलन बनाए रखने और भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव

चीन की समुद्री सक्रियता तथा इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा अवधारणा का विस्तार किया है। अब राष्ट्रीय सुरक्षा केवल स्थलीय सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री अवसंरचना, समुद्री व्यापार तथा महत्वपूर्ण समुद्री संचार मार्गों की सुरक्षा भी इसका अभिन्न अंग बन चुके हैं। भारतीय नौसेना की Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy (2015) में भी इस व्यापक सुरक्षा दृष्टिकोण पर बल दिया गया है, जिसमें समुद्री सुरक्षा को आर्थिक विकास, राष्ट्रीय शक्ति तथा विदेश नीति से सीधे जोड़ा गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन की समुद्री रणनीति, क्वाड का विकास तथा हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को व्यापक और बहुआयामी बनाया है। भारत ने एक ओर अपनी समुद्री एवं रक्षा क्षमताओं का आधुनिकीकरण किया है, वहीं दूसरी ओर बहुपक्षीय सहयोग, सामरिक स्वायत्तता तथा नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के समर्थन को भी अपनी विदेश नीति का प्रमुख आधार बनाया है। यही संतुलित दृष्टिकोण समकालीन भारतीय राजनीति में इंडो–पैसिफिक रणनीति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

निष्कर्ष

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र इक्कीसवीं शताब्दी की वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा का सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाली यह भू–राजनीतिक अवधारणा केवल समुद्री सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री संपर्क, आपूर्ति शृंखलाओं तथा अंतरराष्ट्रीय शक्ति–संतुलन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। भारत के लिए इंडो–पैसिफिक का महत्त्व उसकी भौगोलिक स्थिति, विस्तृत समुद्री तटरेखा, हिंद महासागर में रणनीतिक उपस्थिति तथा समुद्री व्यापार पर निर्भर अर्थव्यवस्था के कारण और अधिक बढ़ जाता है। इसलिए भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में इंडो–पैसिफिक आज एक केंद्रीय स्थान प्राप्त कर चुकी है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति किसी सैन्य गठबंधन या शक्ति–संघर्ष की नीति नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र, समावेशी, नियम–आधारित एवं बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था की समर्थक है। Act East Policy, SAGAR (Security and Growth for All in the Region) तथा Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI) जैसी पहलों ने भारत की समुद्री कूटनीति को नई दिशा प्रदान की है। इन पहलों के माध्यम से भारत ने समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय सहयोग, क्षमता निर्माण, समुद्री संपर्क, आपदा प्रबंधन तथा ब्लू इकोनॉमी जैसे क्षेत्रों में अपनी सक्रिय भूमिका को सुदृढ़ किया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि चीन की समुद्री रणनीति, Belt and Road Initiative (BRI), String of Pearls तथा हिंद महासागर में बढ़ती नौसैनिक सक्रियता ने भारत के समक्ष नई सामरिक चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। इन चुनौतियों के परिणामस्वरूप भारत ने अपनी समुद्री सुरक्षा, नौसैनिक आधुनिकीकरण, तटीय निगरानी, समुद्री क्षेत्र जागरूकता (Maritime Domain Awareness) तथा बहुपक्षीय रक्षा सहयोग को अधिक महत्त्व दिया है। इसी संदर्भ में क्वाड (QUAD) भारत की सामरिक एवं राजनीतिक नीति का एक महत्त्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है। यद्यपि भारत क्वाड को किसी सैन्य गठबंधन के रूप में नहीं देखता, तथापि समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, साइबर सुरक्षा, उभरती प्रौद्योगिकियों तथा आपूर्ति शृंखला सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में यह मंच भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

समकालीन भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि भारत ने अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए बहुपक्षीय सहयोग, संतुलित कूटनीति तथा राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के मध्य सफल समन्वय स्थापित किया है। भारत एक ओर अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस तथा आसियान देशों के साथ रणनीतिक सहयोग को सुदृढ़ कर रहा है, वहीं दूसरी ओर वह किसी सैन्य गुट का औपचारिक सदस्य बने बिना स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण कर रहा है। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक उत्तरदायी, विश्वसनीय तथा स्थिर शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति केवल समुद्री सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा, विदेश नीति, रक्षा कूटनीति तथा क्षेत्रीय सहयोग की

एक व्यापक और दीर्घकालिक रणनीति है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, समुद्री अवसंरचना, जलवायु परिवर्तन, समुद्री संसाधनों के संरक्षण तथा ब्लू इकोनॉमी जैसे नए आयाम भारत की इंडो–पैसिफिक नीति को और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाएँगे। अतः भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी समुद्री एवं रक्षा क्षमताओं का निरंतर आधुनिकीकरण करे, हिंद महासागर क्षेत्र में साझेदार देशों के साथ सहयोग को सुदृढ़ बनाए तथा अंतरराष्ट्रीय कानून और नियम–आधारित व्यवस्था के समर्थन के माध्यम से एक सुरक्षित, स्थिर एवं समावेशी इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के निर्माण में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाए। यही नीति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को दीर्घकालिक आधार प्रदान करेगी तथा उसे वैश्विक राजनीति में एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ–

1. Ministry of External Affairs, Prime Minister's Keynote Address at Shangri-La Dialogue, 2018, https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm
2. Ministry of Defence, Annual Reports; PRS Legislative Research, Evaluation of India's Indian Ocean Strategy, https://prsindia.org/policy/report-summaries/evaluation-of-india-s-indian-ocean-strategy
3. Ministry of External Affairs, Indo-Pacific Oceans Initiative, https://www.mea.gov.in/
4. Ministry of External Affairs, Prime Minister's Keynote Address at Shangri-La Dialogue, 1 June 2018
5. Shinzo Abe, Confluence of the Two Seas, Parliament of India Address, 2007; https://www.mofa.go.jp/region/asia-paci/pmv0708/speech-2.html
6. Ministry of External Affairs, Prime Minister's Keynote Address at Shangri-La Dialogue, 2018
7. Observer Research Foundation, The Indo-Pacific Oceans Initiative, https://www.orfonline.org/
8. Ministry of External Affairs, India-ASEAN Relations, https://www.mea.gov.in/aseanindia/
9. C. Raja Mohan, Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific, Carnegie Endowment, 2012, P. 2-5
10. Ministry of External Affairs, Act East Policy, URL: Ministry of External Affairs – Act East Policy; Ministry of External Affairs, ASEAN-India Relations
11. Ministry of External Affairs, SAGAR Vision; MEA – SAGAR Vision; Embassy of India, Dili, From SAGAR to Indo-Pacific to MAHASAGAR
12. Indian Navy, Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy, 2015; Ministry of Defence, Annual Report 2024–25
13. External Affairs Minister's Speech on Indo-Pacific, URL: Speech on Indo-Pacific and IPOI; University of Wollongong, Indo-Pacific Oceans Initiative Project.
14. C. Raja Mohan, Samudra Manthan, 2012, p. 59
15. G. S. Khurana, India's Maritime Strategy: Context and Subtext, 2017; CSIS – India's Conceptualization of Maritime Security
16. Indian Navy, Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy, 2015, pp. 78–96
17. Ministry of External Affairs, Foreign Secretary's Remarks on Quad; MP-IDSA – INMSS-2026: What India's New Maritime Strategy Means
18. Indian Navy, Ensuring Secure Seas: Indian Maritime Security Strategy, 2015, pp. 96–103; Ministry of External Affairs, India–US Relations, URL: https://www.mea.gov.in/

Cite this Article

"मुकुल कुमार", "इंडो–पैसिफिक रणनीति और भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षाः राजनीतिक दृष्टिकोण", ResearchNext International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9725 (Online), Volume:2, Issue:3, July-September 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."